अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है

प्रमाणों और चमत्कारों का विश्वकोश

मुहम्मद ﷺ की नुबूवत और क़ुरआन के सत्य होने के प्रमाण

वैज्ञानिक चमत्कार · ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य · पूरी हुई भविष्यवाणियाँ

तौरात और इंजील की शुभसूचनाएँ · जिन्न, जादू और अदृश्य का संसार

इतनी सरलता से समझाया कि बच्चा भी समझ ले · 151 रंगीन चित्र

151 प्रमाण, अपनी शक्ति के क्रम में

भाग तीन

तौरात और इंजील की पूर्वसूचनाएँ

वे पाठ जो आज तक अहले-किताब के ग्रन्थों में लिखे हुए हैं, और एक आने वाले नबी का वर्णन करते हैं जिसका हुलिया समूचे इतिहास में केवल एक ही व्यक्ति पर बैठता है — और किसी पर नहीं।

12 प्रमाण

94

व्यवस्थाविवरण

उनके भाइयों में से एक नबी, तेरे जैसा

> मैं उनके भाइयों में से उनके लिए तेरे जैसा एक नबी खड़ा करूँगा, और अपने शब्द उसके मुँह में डालूँगा; और वह उनसे वह सब कहेगा जो मैं उसे आदेश दूँगा।
>
> **व्यवस्थाविवरण — अध्याय 18, आयत 18**

उनके भाइयों में से

बनी इसराईल इसहाक़ से
और उनके भाई इस्माईल की सन्तान
तो वह नबी अरबों में से है
बनी इसराईल में से नहीं

➔

मूसा जैसा

एक पूरी शरीअत
एक पिता और एक माँ... जन्मे और मरे
नेता, योद्धा और विधायक
और अपनी क़ौम के साथ हिजरत करके निकले

"और अपने शब्द उसके मुँह में डालूँगा" — वह जो वह्य की जाए वही अक्षर दर अक्षर बोलता है

एक ही पाठ में तीन शर्तें: भाइयों में से, मूसा जैसा, और वही बोलने वाला जो उसके मुँह में डाला जाए

सीधी-सादी बात में

अल्लाह मूसा से एक आने वाले नबी का वादा करता है जिसमें तीन गुण होंगे: वह बनी इसराईल के **भाइयों** में से होगा, उनमें से नहीं; वह **मूसा जैसा** होगा; और वह **वही शब्द बोलेगा जो उसके मुँह में डाले जाएँगे**।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यहूदी सदियों तक इस नबी का इन्तज़ार करते रहे, और जो भी प्रकट होता उससे उसके बारे में पूछते। यूहन्ना के सुसमाचार में उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से पूछा: "क्या तू एलियाह है?" उसने कहा नहीं। "क्या तू **वह नबी** है?" उसने कहा नहीं — और यह दिखाता है कि "वह नबी" एक विशेष तीसरा प्रतीक्षित व्यक्ति था, मसीह से भी अलग और एलियाह से भी अलग।

आज विज्ञान क्या कहता है?

तौरात की भाषा में "**उनके भाइयों**" का अर्थ है चचेरे भाई, एक ही पिता के बेटे नहीं — बनी इसराईल इसहाक़ से हैं, और उनके भाई इस्माईल की सन्तान हैं, यानी अरब। रहा "**तेरे जैसा**", तो सावधान तुलना मुहम्मद ﷺ तक पहुँचाती है: वे माता-पिता से सामान्य ढंग से पैदा हुए, उन्होंने विवाह किया और सन्तान हुई, वे एक पूरी शरीअत लाए, उन्होंने अपनी क़ौम का नेतृत्व किया और लड़े और शासन किया, वे अपने नगर से हिजरत करके गए, और उनका देहान्त स्वाभाविक ढंग से हुआ। और स्वयं व्यवस्थाविवरण अन्त में कहता है: "**और इसराईल में मूसा जैसा कोई नबी फिर नहीं उठा**" (34:10) — और यह बनी इसराईल के सारे नबियों को तुलना से बाहर कर देता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीसरी शर्त निर्णायक है: "**और अपने शब्द उसके मुँह में डालूँगा, और वह उनसे वह सब कहेगा जो मैं उसे आदेश दूँगा**"। यह ऐसे नबी का वर्णन है जो **शब्द दर शब्द लिखवाया गया पाठ** बोलता है, उसका आशय नहीं। और क़ुरआन का ठीक यही वर्णन है: "**और वह अपनी इच्छा से नहीं बोलता; वह तो बस एक वह्य है जो उतारी जाती है**"। और मुहम्मद ﷺ पर सबसे पहले जो उतरा वह ग्रहण करने का सीधा आदेश था: "पढ़।" फिर बाइबिली पाठ एक कड़ी चेतावनी पर बन्द होता है: "और ऐसा होगा कि जो कोई मेरे उन शब्दों को न सुनेगा जो वह मेरे नाम से कहेगा, मैं उससे उसका हिसाब लूँगा।" तो यह केवल कोई शुभ समाचार नहीं, बल्कि **पालन की अनिवार्यता** है।

व्यवस्थाविवरण

95 और वह फ़ारान पर्वत से जगमगा उठा

प्रभु सीना से आया, और सेईर से उन पर उदय हुआ; वह फ़ारान पर्वत से जगमगा उठा, और दस हज़ार पवित्र जनों के साथ आया।

व्यवस्थाविवरण — अध्याय 33, आयत 2

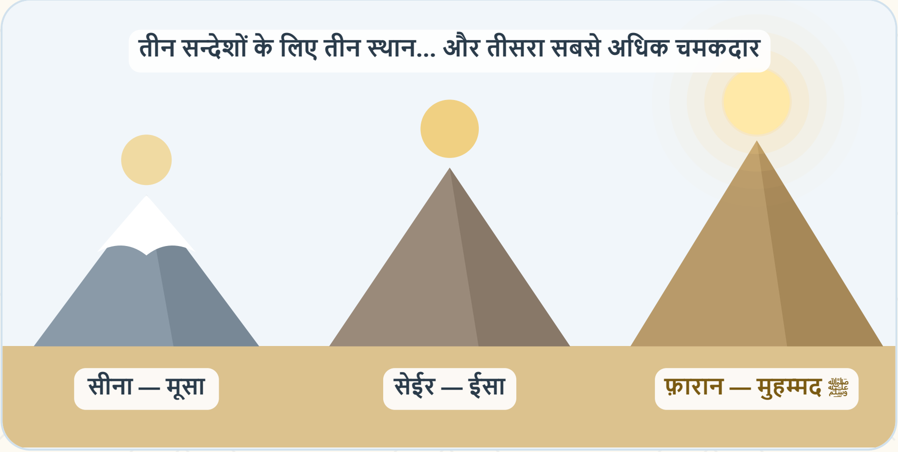

प्रकाश की तीन श्रेणियाँ: वह उदय हुआ... फिर वह जगमगा उठा

सीधी-सादी बात में

तौरात का एक पाठ क्रम से तीन पर्वतों के नाम लेता है: **सीना**, जहाँ अल्लाह ने मूसा से बात की; फिर **सेईर**, ईसा की भूमि; फिर **फ़ारान**। और फ़ारान — स्वयं तौरात के पाठ से — वह भूमि है जहाँ इस्माईल और उनकी सन्तान बसी: मक्का और उसके आस-पास।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यहूदी और ईसाई हज़ारों वर्ष से अपने ग्रन्थों में यह पाठ पढ़ते आए हैं। और जो समस्या वे कभी हल नहीं कर सके वह यह है: **तीसरी घटना क्या है?** प्रभु का सीना से आना तौरात है, और उसका सेईर से उदय होना इंजील — तो फ़ारान से क्या जगमगाया? उस क्षेत्र में बाक़ी दोनों के बराबर की कोई धार्मिक घटना घटी ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

फ़ारान स्वयं तौरात में एक निश्चित स्थान है। उत्पत्ति (21:21) इस्माईल के बारे में कहती है: "**और वह फ़ारान के जंगल में रहने लगा: और उसकी माँ ने मिस्र देश से उसके लिए एक पत्नी ली**।" तो यह उनके अपने ही पाठ से इस्माईल की सन्तान का देश है। मुसलमान भूगोलवेत्ता और बाइबिली शब्दकोश फ़ारान के जंगल को उत्तरी हिजाज़, सीना प्रायद्वीप और उनके बीच की भूमि में रखते हैं। और उस जंगल से किसी सार्वभौमिक सन्देश वाला कोई नबी नहीं निकला सिवाय मुहम्मद ﷺ के।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अर्थ क्रियाओं की श्रेणी में है, और वह इब्रानी में जान-बूझकर रखी गई है: "**आया**", फिर "**उदय हुआ**", फिर "**जगमगा उठा**" — और जगमगाना सबसे प्रबल और सबसे दूर तक फैलने वाला प्रकाश है। पाठ तीन सन्देशों को बढ़ते क्रम में रखता है और अन्तिम को सबसे अधिक चमकदार बनाता है। फिर वह जोड़ता है: "**उसके दाहिने हाथ से उनके लिए एक अग्निमय व्यवस्था निकली**" — यानी यह अन्तिम आगमन **एक शरीअत** लाता है, केवल कोई उपदेश नहीं। और मूसा के बाद पूरी शरीअत लाने वाले — इबादत, लेन-देन और न्याय पर शासन करने वाली — एकमात्र नबी मुहम्मद ﷺ हैं।

हबक्कूक

96 वह पवित्र जन फ़ारान पर्वत से

अल्लाह तेमान से आया, और वह पवित्र जन फ़ारान पर्वत से। उसका तेज आकाशों पर छा गया, और धरती उसकी स्तुति से भर गई।

हबक्कूक — अध्याय 3, आयत 3

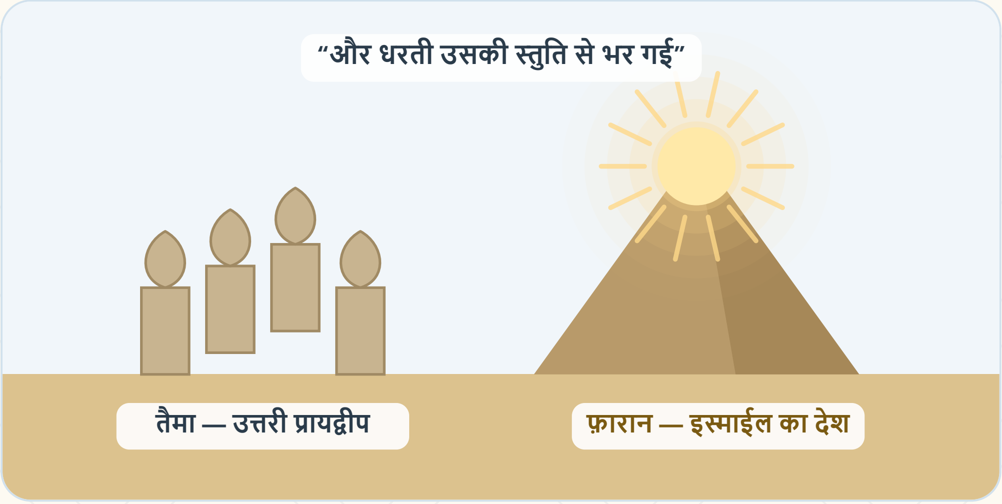

अरब के दो स्थान, जिनके नाम एक इब्रानी नबी ने ईसा-पूर्व युग में लिए

सीधी-सादी बात में

बनी इसराईल का एक नबी **अरब** के दो स्थानों का नाम लेता है: **तैमा** — जो आज तक प्रायद्वीप के उत्तर में एक जाना-माना नगर है — और **फ़ारान**, इस्माईल का देश। और वह कहता है कि पवित्र जन उन्हीं से आएगा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह पाठ अहले-किताब में व्याख्या के आगे टिका रहा। न तैमा बनी इसराईल की भूमि का हिस्सा है न फ़ारान, और उनके इतिहास में इनसे कोई नबी निकला ही नहीं। कुछ ने इसे सीना पर अल्लाह के आगमन का काव्यात्मक वर्णन पढ़ने की कोशिश की — पर यहाँ सीना का ज़िक्र है ही नहीं, और अरब के दो स्थानों का नाम स्पष्ट रूप से लिया गया है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

तैमा आज उत्तर-पश्चिमी सऊदी अरब का एक प्रसिद्ध नख़लिस्तान और पुरातात्विक नगर है, जो कभी हिजाज़ और शाम के बीच के क़ाफ़िला-मार्ग का एक प्रमुख पड़ाव था, और जहाँ ईसा-पूर्व युग के अवशेष तथा शिलालेख हैं। और **फ़ारान** इस्माईल का वही जंगल है जैसा उत्पत्ति कहती है। तो पाठ **एक ही निश्चित क्षेत्र** की ओर इशारा करता है: उत्तरी अरब प्रायद्वीप और हिजाज़। और यही वह जगह है जहाँ से मुहम्मद ﷺ का सन्देश निकला।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दो बातें इस पाठ को संयोग से ऊपर उठा देती हैं। पहली, कि यह **फ़ारान का नाम लेने में व्यवस्थाविवरण के पाठ से मेल खाता है** — दो अलग युगों के दो अलग नबी एक ही जगह की ओर इशारा करते हैं। अपनी ही भूमि से बाहर की किसी जगह पर दो स्वतंत्र गवाहों का मिल जाना एक प्रबल प्रमाण है। दूसरी, पाठ का बाक़ी हिस्सा: "**और धरती उसकी स्तुति से भर गई**" — यानी इस आगमन का असर **सार्वभौमिक है, स्थानीय नहीं**। और उस भूमि से ऐसा कुछ नहीं निकला जिसने धरती को स्तुति से भर दिया हो, सिवाय इस्लाम के, जिसके ज़रिये दिन के हर घंटे हर महाद्वीप पर अज़ान और अल्लाह की तस्बीह बुलन्द होती है।

यशायाह

97 क़ीदार की बस्तियाँ — और सेला के निवासी

> जंगल और उसके नगर अपनी आवाज़ बुलन्द करें, वे बस्तियाँ जिनमें क़ीदार बसता है: चट्टान के निवासी गाएँ, वे पहाड़ों की चोटियों से पुकारें।
>
> **यशायाह — अध्याय 42, आयत 11**

तौरात में "क़ीदार" कौन है?

- **क़ीदार इस्माईल का दूसरा बेटा है**
- **"और ये इस्माईल के बेटों के नाम हैं... नबायोत और क़ीदार"**
- **उत्पत्ति 25:13**
- **और क़ुरैश क़ीदार बिन इस्माईल की नस्ल से हैं**

तो वह नया गीत अरबों की भूमियों से बुलन्द होता है

और सेला: मदीना मुनव्वरा के पास एक जगह जो आज भी इसी नाम से है

यशायाह क़ीदार की बस्तियों को एक नया गीत गाने के लिए पुकारता है

सीधी-सादी बात में

यशायाह कहता है: जंगल अपनी आवाज़ बुलन्द करे, **वे बस्तियाँ जिनमें क़ीदार बसता है**। और क़ीदार — तौरात के पाठ से — इस्माईल का बेटा है, और अदनानी अरबों का पूर्वज, जिनमें क़ुरैश भी हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यशायाह का बयालीसवाँ अध्याय एक ऐसे "बन्दे" की बात करता है जिसे अल्लाह चुनता है, जो क़ौमों तक न्याय पहुँचाता है, और जो तब तक न थकेगा न हिम्मत हारेगा जब तक धरती में सत्य स्थापित न कर दे। अहले-किताब उसकी पहचान पर मतभेद करते रहे हैं। पर स्वयं पाठ **स्थान** निर्धारित कर देता है: क़ीदार की बस्तियाँ और सेला।

आज विज्ञान क्या कहता है?

"**क़ीदार**" का नाम उत्पत्ति (25:13) में इस्माईल के बारह बेटों में आया है। और अदनानी अरब — जिनमें क़ुरैश और बनू हाशिम हैं — उन्हीं की नस्ल से हैं। और उत्तरी प्रायद्वीप के क्षेत्र को असीरी शिलालेखों में सचमुच "क़ेदार" कहा गया है। रहा "**सेला**" (जिसका अनुवाद "चट्टान" किया गया है), तो वह एक ज्ञात स्थान है: **जबल सल्अ**, जो मदीना से लगा हुआ है, जिसके पास अहज़ाब की ख़न्दक़ खोदी गई थी, और जो आज तक उसी नाम से खड़ा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अध्याय पहली आयत में "देखो मेरा बन्दा, जिसे मैं थामे हुए हूँ" से खुलता है — और "बन्दा" वह उपाधि है जो क़ुरआन में मुहम्मद ﷺ के साथ चलती है: "पवित्र है वह जो **अपने बन्दे** को रात में ले गया", "और जब **अल्लाह का बन्दा** उसे पुकारता हुआ खड़ा हुआ"। फिर दसवीं आयत कहती है: "**प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ**" — यानी एक नई शरीअत, पुरानी का नवीनीकरण नहीं। फिर वह इस गीत के लोगों की पहचान कराती है: क़ीदार की बस्तियाँ और सेला के निवासी — **दो विशुद्ध अरबी स्थान**, एक क़ुरैश का वंश और दूसरा मदीना का एक पर्वत। एक ही पाठ में नबी ﷺ का वंश, उनकी हिजरत का नगर, उनकी उपाधि "बन्दा", और एक नई शरीअत की पुकार — इन सबका इकट्ठा हो जाना ऐसा मेल है जो संयोग की गुंजाइश नहीं छोड़ता।

यशायाह

98 गधे का सवार और ऊँट का सवार

और उसने घुड़सवारों की एक जोड़ी वाला रथ देखा, गधों का एक रथ, और ऊँटों का एक रथ; और उसने बहुत ध्यान से, कान लगाकर सुना।

यशायाह — अध्याय 21, आयत 7

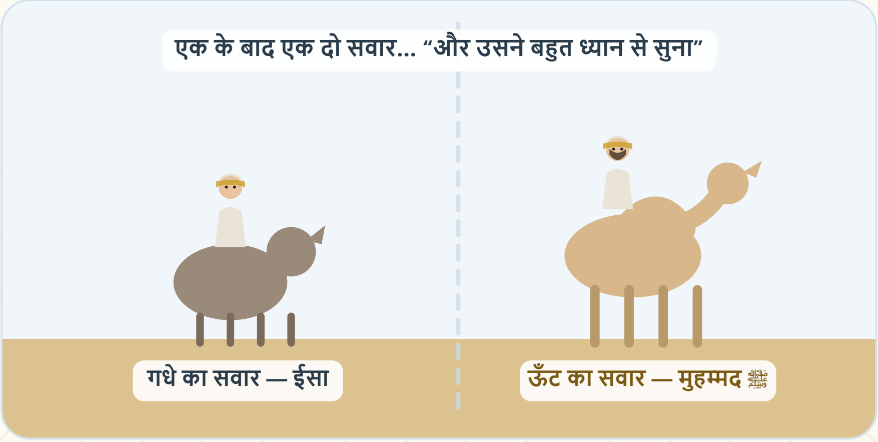

एक पाठ जो दो विशेष सवारों का नाम लेता है और उन्हें सुनने का आदेश देता है

सीधी-सादी बात में

यशायाह की पुस्तक का एक दर्शन जिसमें नबी **दो सवार** देखता है: एक गधे पर और दूसरा ऊँट पर, और उसे आदेश दिया जाता है कि उन्हें पूरे ध्यान से सुने।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अहले-किताब में इस पाठ की व्याख्या बाबुल के पतन के दर्शन के रूप में की जाती रही है। पर स्वयं दृश्य चौंकाने वाला है: दो विशिष्ट सवार, जिनकी पहचान उनकी सवारियों से कराई गई, और नबी को उन्हें सुनने का आदेश — और सुनना किसी सन्देश के लिए होता है, किसी युद्ध की ख़बर के लिए नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

गधे का सवार वह निशानी है जिसे अहले-किताब मसीह अलैहिस्सलाम के लिए पहचानते हैं। ज़कर्याह (9:9) कहता है: "देख, तेरा राजा तेरे पास आ रहा है... नम्र, और गधे पर सवार", और सुसमाचार दर्ज करते हैं कि मसीह उसी भविष्यवाणी को पूरा करते हुए गधे पर सवार होकर यरूशलम में दाख़िल हुए। तो यदि पहला मसीह के रूप में स्थापित है, तो फिर **ऊँट का वह सवार** कौन है जो उनके बाद आया, और जिसे सुनने का आदेश नबी को वैसे ही दिया गया जैसे पहले को सुनने का? और ऊँट अरबों की सवारी है, और मसीह के बाद ऊँट वालों की किसी क़ौम से कोई नबी नहीं आया सिवाय मुहम्मद ﷺ के।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ताक़त **जोड़े और क्रम** में है। ऊँट के सवार का ज़िक्र अकेले नहीं हुआ कि कोई उसे किसी क़ाफ़िले का आम ज़िक्र कह दे — वह गधे के सवार के साथ एक ही दृश्य में, और ठीक उसके बाद, जोड़ा गया है। अहले-किताब यह मान चुके हैं कि "गधे का सवार" किसी विशेष व्यक्ति के लिए एक भविष्यसूचक निशानी है, तो उसी पाठ में उसके साथी का कोई निरर्थक विवरण होना चल ही नहीं सकता। और सुनने का आदेश — "**उसने बहुत ध्यान से, कान लगाकर सुना**" — बताता है कि जो आ रहा है वह **सुनी और मानी जाने वाली बात** है, कोई देखा जाने वाला दृश्य नहीं। और बाक़ी अध्याय में "**अरब पर भार**" का ज़िक्र है और ददान तथा तैमा के नाम हैं और "**क़ीदार का तेज**" — पूरा सन्दर्भ अरबी है।

यशायाह

99 मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ

> ❖ और वह पुस्तक उसे दी जाती है जो पढ़ा-लिखा नहीं है, और कहा जाता है: कृपया इसे पढ़; और वह कहता है: मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। ❖
>
> **यशायाह — अध्याय 29, आयत 12**

यशायाह 29:12	→	हिरा की गुफ़ा
“इसे पढ़”		**“पढ़”**
तो वह कहता है:		**तो उन्होंने ﷺ कहा:**
“मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ”		**“मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ”**
ईसा से सदियों पहले		**सन् 610 ई.**

वही आदेश... और वही उत्तर

एक दृश्य, जिसका वर्णन उसके घटने से एक हज़ार वर्ष से भी पहले हुआ

सीधी-सादी बात में

यशायाह का एक पाठ एक दृश्य का वर्णन करता है: एक पुस्तक ऐसे व्यक्ति को दी जाती है **जो पढ़ नहीं सकता**, और उससे कहा जाता है: “इसे पढ़।” वह उत्तर देता है: “मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ।” और ठीक यही हिरा की गुफ़ा में हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह पाठ नबी ﷺ के जन्म से सदियों पहले अहले-किताब के ग्रन्थों में मौजूद था, और उसका कोई ऐसा पूरा होना न था जिसकी ओर इशारा किया जाता। वे उसे बनी इसराईल के अपनी ही किताब की समझ से अन्धे होने का प्रतीकात्मक संकेत पढ़ते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हिरा की गुफ़ा में, 610 ईस्वी में, जिब्रील मुहम्मद ﷺ के पास आए और कहा: “**पढ़**।” उन्होंने कहा: “**मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ**।” उन्होंने उन्हें दबाया और फिर कहा: “पढ़।” उन्होंने कहा: “मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ” — तीन बार। फिर वह्य उतरी: “अपने रब के नाम से पढ़ जिसने पैदा किया।” यह घटना सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, और सीरत की सबसे प्रसिद्ध तथा सबसे स्थापित चीज़ों में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

मेल केवल अर्थ में नहीं, बल्कि **पूरे दृश्य की बनावट** में है: पढ़ने का आदेश, असमर्थता का उत्तर, और वह भी ऐसे व्यक्ति से जो पढ़ता ही नहीं। और इसके लिए एक अनिवार्य शर्त चाहिए: कि वह वादा किया गया नबी **निरक्षर हो, न पढ़ता हो न लिखता**। और यही वह गुण है जो क़ुरआन मुहम्मद ﷺ के बारे में बताता है और उसी को दलील बनाता है: “**और तुम इससे पहले न कोई किताब पढ़ते थे और न अपने दाहिने हाथ से उसे लिखते थे; वरना झुठलाने वालों को सन्देह का मौक़ा मिल जाता**।” ध्यान दीजिए कि यहाँ निरक्षरता कोई दोष नहीं, बल्कि **प्रमाण** है: यदि वे पढ़ने-लिखने वाले होते, तो कहा जाता कि उन्होंने नक़ल की और उतारा। और यशायाह का पाठ उसी असमर्थता को एक निशानी बनाता है, कोई कमी नहीं।

श्रेष्ठगीत

100 और वह सम्पूर्णतः महमद्दीम है

> हिक्को ममतक़्क़ीम वे-कुल्लो महमद्दीम; ज़ेह दोदी वे-ज़ेह रेई, बनोत येरूशालायिम।
>
> **श्रेष्ठगीत — अध्याय 5, आयत 16 (इब्रानी पाठ)**

मूल इब्रानी पाठ

מַחֲמַדִּים

उच्चारण: महमद्दीम

और अनुवाद में इसे कर दिया गया: "सर्वथा मनोहर"

नाम पाठ में मौजूद है... और अनुवाद में ग़ायब हो गया

इब्रानी शब्द ठीक वैसा ही जैसा वह आज के मानक संस्करणों में खड़ा है

सीधी-सादी बात में

श्रेष्ठगीत के इब्रानी पाठ में शब्द **"महमद्दीम"** आता है — यानी नाम "मुहम्मद" के साथ इब्रानी का महत्ता-प्रत्यय "-ईम"। अनुवाद में उसे "सर्वथा मनोहर" कर दिया जाता है, और इस तरह नाम ग़ायब हो जाता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

श्रेष्ठगीत काव्यात्मक बिम्बों में एक प्रियतम का वर्णन करता है, और उसका वर्णन इसी शब्द पर बन्द होता है: "उसका मुख अत्यन्त मधुर है, **और वह सम्पूर्णतः महमद्दीम है**।" इस पाठ को अल्लाह और उसकी क़ौम के रिश्ते का प्रतीक समझा जाता रहा है, या सादा प्रेम-काव्य।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इब्रानी में प्रत्यय **"-ईम"** बहुवचन का भी है और महत्ता का भी — जैसे "एलोहीम", जो अल्लाह का एक नाम है और बहुवचन के रूप में है हालाँकि एक ही अभिप्रेत है। और इस शब्द की इब्रानी जड़ ד־מ־ח (ह-म-द) वही है जो अरबी की जड़ ह-म-द है। तो "महमद्दीम" अरबी में **मुहम्मद** से मेल खाता है, महत्ता के रूप में। यह शब्द आज भी मानक इब्रानी पाठ में मौजूद है, और कोई भी उसे देख सकता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दलील की ताक़त यह है कि नाम **मूल में बना हुआ है और मिटाया नहीं गया** — वह तो बस अनुवाद में घुल गया है। और ऐसा अक्सर होता है: वे व्यक्तिवाचक नाम जो अपनी भाषा में कोई अर्थ रखते हैं, अनुवाद कर दिए जाते हैं, और नाम खो जाता है। यदि किसी अरबी पाठ में नाम "अब्दुल्लाह" आए तो उसका अनुवाद "अल्लाह का बन्दा" हो जाएगा और वह व्यक्ति ग़ायब हो जाएगा। क़ुरआन कहता है कि उनका नाम ﷺ उनके यहाँ दर्ज है: "**वे जो उस रसूल का, उस निरक्षर नबी का अनुसरण करते हैं, जिसे वे अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं**", और यह कि ईसा ने "**अपने बाद आने वाले एक रसूल का शुभ समाचार दिया जिसका नाम अहमद है**"। तो क़ुरआन साफ़ कहता है कि **स्वयं नाम** उनके पास है — और वह इब्रानी पाठ में आज तक मौजूद है।

101

फ़ारक़लीत — एक दूसरा सान्त्वना देने वाला

> ❖ और मैं पिता से प्रार्थना करूँगा, और वह तुम्हें एक दूसरा सान्त्वना देने वाला देगा, ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रहे। ❖
>
> **यूहन्ना का सुसमाचार — अध्याय 14, आयत 16**

दो यूनानी शब्द... उनके बीच एक ही अक्षर

παράκλητος	περικλυτός
पाराक्लेतोस	पेरिक्लुतोस
"सान्त्वना देने वाला"	"प्रशंसित / अहमद"

और सबसे पुरानी प्रतियों में कोई स्वर-चिह्न ही नहीं थे

ऐसी लिपि में दो शब्दों की गहरी समानता जिसमें स्वर-चिह्न थे ही नहीं

सीधी-सादी बात में

मसीह अलैहिस्सलाम ने अपने बाद एक **फ़ारक़लीत** के आने का वादा किया। यूनानी शब्द *पाराक्लेतोस पेरिक्लुतोस* से बहुत मिलता है, जिसका अर्थ है **"अत्यन्त प्रशंसित"** — यानी अहमद।

उस समय लोग क्या मानते थे?

फ़ारक़लीत की पहचान पर व्याख्याकार प्राचीन काल से मतभेद करते आए हैं। सबसे पुरानी यूनानी प्रतियाँ लगातार बड़े अक्षरों में, बिना अन्तराल और बिना स्वर-चिह्नों के लिखी जाती थीं, इसलिए रूप में इतने मिलते-जुलते दो शब्दों में नक़ल के दौरान गड्डमड्ड हो जाना पूरी तरह सम्भव है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यूहन्ना (अध्याय 14, 15 और 16) में मसीह ने फ़ारक़लीत के जो वर्णन दिए वे केवल किसी मनुष्य पर ही टिकते हैं: "**यदि मैं न जाऊँ तो वह सान्त्वना देने वाला तुम्हारे पास नहीं आएगा**" — यानी उसका आना मसीह के जाने पर निर्भर है, और जो आत्मा पहले से मौजूद हो उसे इसकी ज़रूरत न होती (सुसमाचार दर्ज करते हैं कि पवित्र आत्मा यूहन्ना के साथ उसकी माँ के गर्भ में थी और मसीह के साथ उनके बपतिस्मा पर)। और "**एक दूसरा सान्त्वना देने वाला**" — तो वह पहले ही की जाति का है, यानी उन्हीं जैसा एक नबी। और "**ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रहे**" — यानी एक ऐसी शरीअत जो बनी रहे और रद्द न हो।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अध्याय की सबसे प्रबल बात 16वें अध्याय की 13वीं आयत है: "**क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा; बल्कि जो कुछ सुनेगा वही कहेगा: और वह तुम्हें आने वाली बातें बताएगा।**" यह किसी वह्य पाने वाले नबी के सिवा किसी का वर्णन नहीं। इसकी तुलना क़ुरआन से कीजिए: "**और वह अपनी इच्छा से नहीं बोलता; वह तो बस एक वह्य है जो उतारी जाती है**" — लगभग वही वाक्य। फिर "**वह तुम्हें आने वाली बातें बताएगा**" — और यह तो इस किताब का एक पूरा भाग है: पूरी हुई भविष्यवाणियाँ। तो कार्यात्मक वर्णन मेल खाता है, नाम रूप में निकट है, और शर्त ("यदि मैं न जाऊँ") पूरी होती है।

102 वह तुमसे ले लिया जाएगा और किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा

> इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, अल्लाह का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा, और ऐसी क़ौम को दिया जाएगा जो उसके फल लाए।
>
> **मत्ती का सुसमाचार — अध्याय 21, आयत 43**

पाठ एक क़ौम की बात करता है, बनी इसराईल के किसी गिरोह की नहीं

बनी इसराईल	→	एक दूसरी क़ौम
नुबूवत उनमें		"जो उसके फल लाए"
लगातार सदियों तक		उनकी नस्ल से नहीं
"तुमसे ले लिया जाएगा"		"और एक क़ौम को दिया जाएगा"

जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने रद्द किया वही कोने का सिरा बन गया

नुबूवत का एक शाखा से दूसरी शाखा में जाना — स्वयं सुसमाचार के पाठ से

सीधी-सादी बात में

मसीह अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल से कहा कि **अल्लाह का राज्य उनसे ले लिया जाएगा और किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा** जो वह करेगी जो उसे पसन्द है। यानी नुबूवत बनी इसराईल से निकलकर दूसरों की ओर चली जाएगी।

उस समय लोग क्या मानते थे?

नुबूवत अटूट सदियों से बनी इसराईल में थी: इब्राहीम, इसहाक़, याक़ूब, यूसुफ़, मूसा, दाऊद, सुलैमान, यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल और दूसरे। वे मानते थे कि नुबूवत उनके वंश में सुरक्षित एक अधिकार है जो उनसे कभी नहीं जाएगा। और इसीलिए उन्होंने यह मानने से इनकार किया कि अरबों में से कोई नबी उठाया जाए।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मुहम्मद ﷺ **इस्माईल की सन्तान** से भेजे गए — यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सन्तान की दूसरी शाखा से। तो नुबूवत इतिहास में पहली बार इसहाक़ की सन्तान से इस्माईल की सन्तान की ओर चली गई। और उनके ज़रिये एक नई क़ौम खड़ी हुई जो पहले थी ही नहीं, और जो धरती के सभी महाद्वीपों तक फैल गई। और क़ुरआन ठीक इसी बिन्दु पर उठने वाली उस ईर्ष्या की ओर इशारा करता है: "**या वे लोगों से इस बात पर ईर्ष्या करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया?**"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

शब्द **"क़ौम"** निर्णायक है। उन्होंने न कहा "तुममें से किसी गिरोह को दिया जाएगा" और न "किसी नेक बचे हुए हिस्से को" — उन्होंने कहा "**एक क़ौम को**", और यूनानी (एथ्नोस) का अर्थ है **एक दूसरी जाति**। इस पाठ से पहले उस अंगूर के बाग़ का दृष्टान्त है जिसके मज़दूरों ने अपने पास भेजे गए सन्देशवाहकों को मार डाला और फिर बेटे को भी मार डाला, तो वे इसी योग्य हुए कि वह उनसे छीनकर दूसरों को सौंप दिया जाए। और उसके तुरन्त बाद आता है: "**जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने रद्द कर दिया, वही कोने का सिरा बन गया**" — यानी वही रद्द की गई शाखा जिस पर इमारत टिकेगी। और इस्माईल की सन्तान नुबूवत के हर अभिलेख में छोड़ दी गई शाखा है — यहाँ तक कि उसी से नबियों का ख़ातम आया।

103

बारह सरदार — और एक बड़ी क़ौम

❖ और रहा इस्माईल, तो मैंने तेरी सुन ली: देख, मैंने उसे बरकत दी है, और उसे फलदायी बनाऊँगा, और उसे बहुत बढ़ाऊँगा; उससे बारह सरदार पैदा होंगे, और मैं उसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा। ❖

उत्पत्ति — अध्याय 17, आयत 20

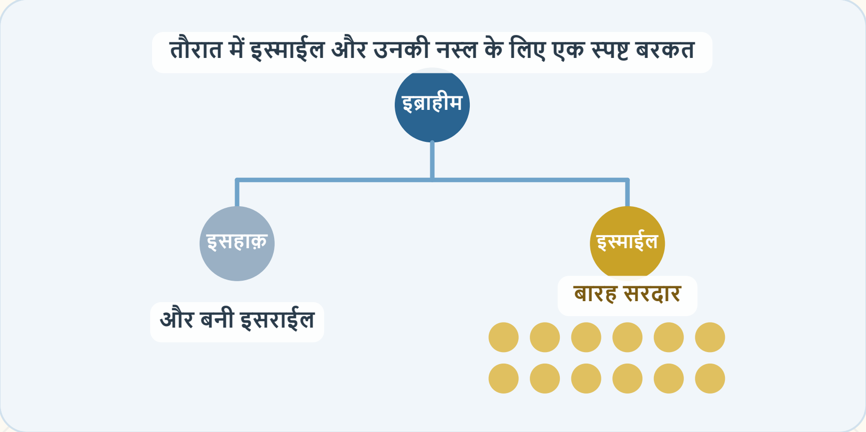

एक पाठ जो इस्माईल के लिए एक बरकत, एक वंश और एक बड़ी क़ौम की पुष्टि करता है

सीधी-सादी बात में

स्वयं तौरात दर्ज करती है कि अल्लाह ने **इस्माईल** को बरकत दी, और वादा किया कि उनकी पीठ से **बारह सरदार** निकलेंगे, और वह उन्हें **एक बड़ी क़ौम** बनाएगा। तो बरकत अकेले इसहाक़ तक सीमित नहीं है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

बनी इसराईल में यह धारणा फैली हुई थी कि पूरा वादा इसहाक़ और उनके वंश में है, और इस्माईल तथा उनकी सन्तान अहद से बाहर हैं। इसी आधार पर अरबी पक्ष से आने वाली हर भविष्यवाणी रद्द कर दी जाती थी। पर पाठ इस्माईल के लिए एक स्वतंत्र बरकत की पुष्टि में स्पष्ट है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इस्माईल के बारह बेटों के नाम उत्पत्ति (25:13-16) में आए हैं, और सूची इस पर बन्द होती है: “**अपनी-अपनी क़ौमों के अनुसार बारह सरदार**” — और ये वही ज्ञात उत्तरी अरब क़बीले हैं, और उनमें से कई के नाम असीरी शिलालेखों में आते हैं। रहा **एक बड़ी क़ौम** का वादा, तो वह इस्लाम में पूरा हुआ: एक ऐसी क़ौम जो इस्माईल के वंश से निकली और धरती के पूरब और पश्चिम तक पहुँची।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह पाठ उस बुनियादी दलील को ही ढा देता है जिसके सहारे मुहम्मद ﷺ की नुबूवत रद्द की जाती थी। यदि स्वयं तौरात इस्माईल के लिए **एक बरकत**, **एक बड़ा वंश** और **एक बड़ी क़ौम** की पुष्टि करती है, तो उनकी शाखा को नुबूवत से बाहर रखने का कोई आधार ही नहीं। और वादे के क्रम पर ध्यान दीजिए: बरकत, फिर फलना और बढ़ना, फिर बारह सरदारों में सरदारी, फिर **“एक बड़ी क़ौम”** — वह लक्ष्य जिस पर वह बन्द होता है। और उत्पत्ति (21:21) कहती है कि इस्माईल **फ़ारान के जंगल** में बसे — ठीक वही जगह जहाँ से व्यवस्थाविवरण के पाठ में प्रकाश “जगमगा उठा”। पाठ एक-दूसरे की पुष्टि करते हैं और एक ही दिशा की ओर इशारा करते हैं।

एक तुलना

104 मूसा जैसा — वह तुलना जो फ़ैसला कर देती है

> ❖ और इसराईल में मूसा जैसा कोई नबी फिर नहीं उठा, जिसे प्रभु ने आमने-सामने जाना। ❖
>
> **व्यवस्थाविवरण — अध्याय 34, आयत 10**

विशेषता	मूसा	मुहम्मद ﷺ
सामान्य जन्म	✓	✓
एक पिता और एक माँ	✓	✓
पत्नी और सन्तान	✓	✓
एक पूरी शरीअत	✓	✓
नेता और योद्धा	✓	✓
अपने नगर से हिजरत	✓	✓
स्वाभाविक मृत्यु	✓	✓

“तेरे जैसा” — और तौरात इनकार करती है कि वह बनी इसराईल से हो

सात गुण जो दो व्यक्तियों में मिलते हैं और किसी तीसरे में नहीं

सीधी-सादी बात में

तौरात ने **मूसा जैसे** एक नबी का वादा किया। और जब हम तुलना करते हैं तो पाते हैं कि वे गुण मुहम्मद ﷺ में मिलते हैं और किसी दूसरे नबी में नहीं मिलते।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अहले-किताब “मूसा जैसे नबी” का इन्तज़ार करते रहे और उसकी पहचान पर कभी एकमत नहीं हुए। बनी इसराईल का जो भी नबी इस पद के लिए पेश किया जाता है उसमें एक या अधिक शर्त पूरी नहीं होती: उनमें से कोई कोई नई शरीअत नहीं लाया, और किसी ने किसी राज्य का नेतृत्व या कोई युद्ध नहीं किया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मूसा और मुहम्मद ﷺ के बीच समानता के बिन्दुओं में हैं: माता-पिता से सामान्य ढंग का जन्म; विवाहित जीवन और सन्तान; **एक पूरी शरीअत** जो इबादत, लेन-देन, न्याय और दंड पर शासन करती है; एक क़ौम का नेतृत्व, युद्ध और शासन; उत्पीड़न की भूमि से स्थापना की भूमि की ओर **एक हिजरत**; अपने जीवनकाल में अपने दुश्मनों पर विजय; और स्वाभाविक मृत्यु तथा धरती में दफ़्न। और मूसा के बाद किसी दूसरे नबी में यह सब इकट्ठा नहीं मिलता।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

स्वयं तौरात ने दरवाज़ा बन्द कर दिया: “**और इसराईल में मूसा जैसा कोई नबी फिर नहीं उठा।**” यह एक स्पष्ट गवाही है कि वह वादा किया गया नबी **बनी इसराईल से नहीं है**, वरना पाठ अपना ही खंडन करने लगेगा। और जब इसे 18वें अध्याय की 18वीं आयत — “उनके **भाइयों** में से” — के साथ जोड़ा जाए तो निष्कर्ष अनिवार्य रूप से निकलता है: उनके चचेरे भाइयों में से एक नबी — इस्माईल की सन्तान। यहूदी इसे शुरू में समझते थे, इसीलिए क़ुरआन कहता है: “**और वे इनकार करने वालों पर विजय की दुआ माँगते थे — पर जब उनके पास वह आ गया जिसे वे पहचानते थे, तो उन्होंने उसका इनकार कर दिया**” — वे उसका इन्तज़ार करते थे और उसकी ख़बर देते थे, यहाँ तक कि वह उनके अपने वंश के सिवा कहीं और से आ गया।

इस भाग का सार

105 वे उसे अपने पास लिखा हुआ पाते हैं

> वे जो उस रसूल का, उस निरक्षर नबी का अनुसरण करते हैं, जिसे वे अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं।
>
> **सूरह अल-आराफ़ — आयत 157**

क़ुरआन अकेले अपनी ओर नहीं, बल्कि उसी की ओर इशारा करता है जो अहले-किताब के हाथों में है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन साफ़ कहता है कि नबी ﷺ का वर्णन **उसी तौरात और इंजील में लिखा हुआ है** जो अहले-किताब के हाथों में है। और यह उनके लिए एक खुली चुनौती है कि वे अपनी किताबें खोलें और देखें।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मदीना, नजरान और यमन के यहूदियों तथा ईसाइयों के पास अपने ग्रन्थ थे और वे उन्हें पढ़ते थे, और उनमें उनके पाठों के विशेषज्ञ विद्वान भी थे। तो यह दावा कि नबी ﷺ का वर्णन उनकी किताबों में है — **उसी दिन झुठलाया जा सकता था** यदि उसका कोई आधार न होता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यहाँ जो पाठ गुज़रे — व्यवस्थाविवरण 18 और 33, हबक्कूक 3, यशायाह 21, 29 और 42, श्रेष्ठगीत 5, यूहन्ना 14 और 16, मत्ती 21, और उत्पत्ति 17 तथा 21 — **वे सब आज के मानक संस्करणों में मौजूद हैं**, और कोई भी पाठक किताब खोलकर उन्हें पढ़ सकता है। और आयत ने यह दावा भी नहीं किया कि नाम हर जगह खुलकर लिखा है; उसने कहा "**वे उसे पाते हैं**" — यानी वे उसका वर्णन और उसकी निशानियाँ पाते हैं और उन्हीं से उसे पहचानते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ताक़त यहाँ किसी और ही क़िस्म की है। क़ुरआन अपनी ओर से दलील नहीं देता; वह **विरोधी की अपनी किताब की ओर इशारा करता है**। और यह सबसे ख़तरनाक क़िस्म की दलील है और सबसे आसानी से रद्द की जा सकने वाली — उनके लिए इतना काफ़ी था कि वे अपने ग्रन्थ खोलें और उन्हें ख़ाली दिखा दें। फिर भी उनके जिन विद्वानों ने इस्लाम क़बूल किया उन्होंने ठीक इसी कारण किया — और उनमें मदीना के यहूदियों के रब्बी अब्दुल्लाह बिन सलाम भी थे। फिर क़ुरआन ने साहस में और आगे बढ़कर कहा: "**वे उसे यूँ पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं**" — और ऐसी तुलना वही करता है जो निश्चिन्त हो। और चौदह सदियों से इन पाठों का उनकी किताबों में बना रहना, जिन्हें शोधकर्ता पढ़ते और उन पर बहस करते हैं, स्वयं उसी चुनौती का आज तक चलता रहना है।